RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 72 अंक :31
सृष्टि संवत् 1960853116
1 नवम्बर 2015
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–72, अंक : 31, 29/1 नवम्बर 2015 तदनुसार 16 कार्तिक सम्वत् 2072 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

भगवान् सबसे विशाल

-ले० श्री स्वामी वेदानंद जी (दयानन्द) तीर्थ

प्राक्तुभ्य इन्द्रः प्र वृधो अहभ्यः प्रान्तरिक्षात्प्र समुद्रस्य धासेः।
प्र वातस्य प्रथसः प्र ज्मो अन्तात्प्र सिन्धुभ्यो रिरिचे प्र क्षितिभ्यः।।

-ऋ० ८।८१।११।

शब्दार्थ-इन्द्रः-इन्द्र परमेश्वर **अक्तुभ्यः**-रात्रियों से **प्रः**-बहुत **रिरिचे**-अधिक है, विशाल है और **वृधः**-विशालता के कारण **अहभ्यः**-दिनों से **प्र**-बहुत विशाल है **अन्तरिक्षात्**-अन्तरिक्ष से **प्र**-बहुत विशाल है **समुद्रस्य**-समुद्र की **धासेः**-धारण शक्ति से, विशालता से **प्र**-बहुत अधिक विशाल है **वातस्य**-वायु के **प्रथसः**-फैलाव से **प्र**-अधिक है **ज्मः** पृथिवी के **अन्तात्**-सिरे से **प्र**-परे है **सिन्धुभ्यः**-नदियों से, समुद्रों से, बहने वाले तरल Liquid पदार्थों से **प्र**-परे है और **क्षितिभ्यः**-रहने के स्थानों से **प्र+रिरिचे**-बहुत अधिक बढ़ा हुआ है।

व्याख्या-माता जिस प्रकार अतीव स्नेह से बालक को सरलता से ज्ञान कराती है, उसी प्रकार वेद माता भी अत्यन्त सरलता से बालक को बोध कराती है। काल बहुत विशाल है। काल की कलना कोई नहीं कर सका। दिन-रात में बटा हुआ भी काल अकलनीय ही रहता है। वेद कहता है-'कालो ह भूतं भव्यं च' (अ० ११।५४।३) काल ही भूत और भविष्यत् है। जब भूत-भविष्य काल है, तो कौन कह सकता है कि भूत कितना है ? कौन कहने का साहस कर सकता है कि भविष्यत् कितना है ? वेद कहता है-**'प्राक्तुभ्य इन्द्रः प्र वृधो अहभ्यः'** -इन्द्र अपनी विशालता के कारण रात-दिन से बड़ा है। काल की कलना की कल्पना करते विकलता छा जाती है, तो जो काल से विशाल है उसकी कलना-कल्पना कैसे हो ? वह काल से विशाल प्रभु अप्रतर्क्यपरिमाण अन्तरिक्ष से भी विशाल है-**'त्वमस्य पारे रजसो व्योमनः'** (ऋ० १।५२।१२)-तू इस आकाशलोक से भी परे है, अर्थात् आकाश का आकाश भी तेरे सामने कुशकाश है-**'न यस्य द्यावापृथिवी अनु व्यचो न सिन्धवो रजसो अन्तमानशुः'** (ऋ० १।५२।१४)-द्यौ, पृथिवी और अन्तरिक्ष जिसकी व्यापकता-विशालता का अन्त नहीं पा सकते। वायु तो अन्तरिक्ष और पृथिवी के मध्य में बहुत-थोड़ा स्थान लेता है। उसका पसारा कितना हो सकता है ?

इस मन्त्र का एक भाव और भी है, वह यह कि भगवान् इन सबमें रहता हुआ भी इन सबसे अतिरिक्त है। रिक्त-प्ररिक्त-अतिरिक्त एक पदार्थ के वाचक हैं। उद्दालक आरुणि के प्रश्न का उत्तर देते हुए याज्ञवल्क्य ने बहुत सुन्दरता से इसका निरूपण किया है-**'यः पृथिव्यां तिष्ठन् पृथिव्या अन्तरो, यं पृथिवी न वेद, यस्य पृथिवी शरीरं यः पृथिवीमन्तरो यमयति, एष त आत्मातर्याम्यमृतः'** (बृहदा० ३।७।३)-जो पृथिवी में रहता हुआ पृथिवी से भिन्न है, जिसको पृथिवी नहीं जानती, पृथिवी जिसका शरीर-सा है। जो पृथिवी को भीतर से नियमित करता है, वही तेरा अन्तर्यामी आत्मा अमृत है। याज्ञवल्क्य जी ने अन्तर्यामी भगवान् को अग्नि, अन्तरिक्ष, वायु, द्यौ, आदित्य, चन्द्र, तारे, आकाश, तमः (अन्धकार), तेजः, सर्वभूत, प्राण, वाणी, चक्षु, श्रोत्र, मन, त्वचा, विज्ञान (आत्मा) और रेत में रहता हुआ और उन सबसे अलग बताया है। सबमें रहता हुआ सबसे न्यारा यह तभी हो सकता है, जब सबमें रहकर बाहर भी हो। यजुर्वेद ४०।५ में कहा है-**'तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः'**-वह (भगवान्) इन सबके भीतर भी है और बाहर भी। विशाल संसार की कल्पना मनुष्य की बुद्धि में नहीं आती, तो उससे महान् भगवान् के सम्बन्ध में क्या कहा जा सकता है? सामवेद के शब्दों में इतना ही कहना पर्याप्त है-**'तावानस्य महिमा ततो ज्यायाँश्च पुरुषः'** (साम० ६२०) यह सब भगवान् की महिमा-महत्त्व द्योतक है, भगवान् इससे बहुत महान् हैं।

-स्वाध्याय संदोह से साभार

वियोग की वेदना

-ले० श्री भद्रसेन वेद दर्शनाचार्य-होशियारपुर

(गतांक से आगे)

अत: हमारे पारस्परिक विविध सम्बन्धों का न तो शरीर से सम्बन्ध है और न ही आत्मा से अपितु इन दोनों के सम्बन्ध से ही हमारा सम्बन्ध है। और इन दोनों के सम्बन्ध के टूटने पर सारे सांसारिक सम्बन्ध भी स्वत: समाप्त हो जाते हैं।

सम्भवत: इसी रहस्य को समझाने के लिए कभी यह रिवाज चला होगा। जो कि अब केवल लकीर बन कर रह गया है, क्योंकि उसके भाव पर ध्यान नहीं है। अधिकतर लोग मृतक देह को जब शमशान भूमि में ले जाते हैं तो रास्ते में एक निश्चित स्थान पर उस मृतक को रखते हैं। तब मृतक का ज्येष्ठ पुत्र घर के निकटवर्ती रिश्तेदार द्वारा लाए जाते हुए जल से भरे घड़े को लेकर मृतक के चारों ओर जल को छिड़क कर मृतक के सिर के पास जोर से उसको पटक देता है। जिसका अभिप्राय यह है, कि जैसे जब तक घट के अंग आपस में जुड़े हुए थे तभी तक ही घट अपने सारे व्यवहार करता था। चाहे उसमें जल डालो या तेल, घी आदि कुछ भी डालो, वह उसको संभालता था, पर घट के हिस्सों के अलग-अलग होते ही घट कोई भी व्यवहार नहीं करता। ठीक ऐसे ही जब तक शरीर और आत्मा का सम्बन्ध रहता है, तभी तक सभी सम्बन्ध जुड़े रहते हैं और उस सम्बन्ध के टूटते ही सभी सांसारिक सम्बन्ध स्वत: टूट जाते हैं। इसीलिए ही कुछ शमशान भूमि से लौटते हुए एक स्थान पर बैठकर भूमि से तिनके तोड़ते हैं और तब तिनकों सहित खड़े होकर उन तिनकों को तोड़ कर अपने पीछे फैंक देते हैं। जिसका भाव यही है, कि अब इस आत्मा और शरीर से हमारा सम्बन्ध टूट गया है।

मृत्यु विषयक इन सभी भावों को सामने रखते हुए भी वेद ने क्या ही मार्मिक भाव दर्शाएं हैं, कि-अश्वत्थे वो निषदनं, पर्णे वो वसतिष्कृता।

गोभाज इत्किलासथ, यत्सनवथ पुरुषम्।। -यजु० 12.79

हे दुनिया वालो! जिस दुनिया में तुम रह रहे हो, तुम्हारा यह दुनिया रूपी सहारा, मकान अश्वत्थ (पीपल) के समान चलायमान है। अश्वत्थ-शब्द का अर्थ है न+श्व+स्थ-जो कल नहीं रहेगा। अर्थात् जिसका कोई भरोसा नहीं कल रहेगा या नहीं ? इसका भाव यह है कि दुनिया की जितनी भी चीज़ें, हम अपने व्यवहार में प्रतिक्षण बर्तते हैं, वे सारी की सारी मकान, वस्त्र, बर्तन, फर्नीचर आदि सभी ही परिवर्तनशील हैं। उनमें सदा परिवर्तन आता रहता है और वे एक दिन आंखों से ओझल भी हो जाती हैं।

वेद के इन शब्दों का यह भाव नहीं है, कि ऐसी स्थिति में दुनिया का उपराम हो जाए। अपितु वेद तो खुले शब्दों में ''तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा:'' (यजु० 40, 1) वर्तने का सन्देश दे रहा है। हां, वह इतना ज़रूर कहता है कि इस दुनिया का बर्ताव सोच-समझ के साथ करो। कहीं लोभ में आकर आम के गुद्दे के साथ छिलका और गुठली न खा बैठो। तुम अपने रहने, बर्तने के लिए मकान, वस्त्र आदि भोग्य पदार्थ अवश्य बनाओ, पर इन साथ न जाने वाले पदार्थों को पाने के लिए हेरा-फेरी, बेईमानी, भ्रष्टाचार, मिलावट, स्मगलिंग से माल इकट्ठा करके दूसरों के खून, शोषण, अन्याय, अत्याचार से अपने हाथ न रंगो। क्योंकि यह सब कुछ यहीं का यहीं रखा रह जाएगा। तभी तो किसी कवि ने क्या ही सुन्दर कहा है-

इस धरा का धन धरा पर ही धरा रह जाएगा।

धन तो सच्चा धर्म है, जो काम अन्त में आएगा।।

संसार में हमें तो केवल सांसारिक चीजों को बर्तने का मौका मिला है। अत: हमारी तो होशियारी इस बात में है, कि इनको बिगाड़े बिना ही हम इनका कितना अधिक से अधिक सुन्दर लाभ उठाते हैं। यदि इस अवसर पर लाभ न उठाया, तो फिर पछतावा ही हाथ लगेगा। जैसे कि कोई अपने पड़ोसी से बर्तने के लिए कोई चीज़ मांग कर लाता है। उसकी बुद्धिमत्ता इसी में ही है, कि उतनी देर में उससे अधिक से अधिक लाभ उठा ले। यदि किसी कारण से आप ने मांगी हुई चीज़ को बर्ता नहीं और देने वाले को उसकी ज़रूरत पड़ गई तो वह मांगने आ पहुंचेगा। तब यह कहने से काम नहीं चलेगा, कि मैंने इसको अभी बर्ता भी नहीं। अब तो अवसर हाथ से निकल गया। गिड़गिड़ाने तथा हेरा फेरी की अपेक्षा उस वस्तु को खुशी के साथ कृतज्ञतापूर्वक लौटाने में ही शोभा है।

दुनिया वालो! अपनी सुख-सुविधाओं के लिए इन चीज़ों को खुशी से इकट्ठा करो। पर ध्यान रखना ये साथ जाने वाली नहीं। किसी राजे-महाराजे के साथ भी नहीं गई। चाहे उन्होंने अपनी समझ के अनुसार अपनी व्यवहार की चीज़ें, आभूषण-जवाहरात ही नहीं, अपितु दासियों सहित अपनी सारी रानियों को अपने साथ कब्र में दबवाया हो। पर वे सारी यहीं की यहीं रह गईं। कोई चीज़ भी किसी के साथ नहीं गई। पुन: इन नाशवान्, यहीं रहने वाली चीज़ों के लिए इतनी हेरा-फेरी, बेईमानी क्यों ? दु:ख की बात तो यह है, कि और क्षेत्रों की तो बात ही क्या ? आज तो हमने धर्म के क्षेत्र को भी भ्रष्टाचार का धन्धा और अड्डा बना दिया है। मैं अधिकतर धर्म-कर्म, दान-पुण्य केवल पापों को छिपाने के लिए या दूसरों की आंखों में धूल फैंकने के लिए ही करता हूं। तभी तो नत्थासिंह ने लिखा था-बांटता है कम्बल, लोगों की चमड़ी ऊधेड़ के। और गुरू जी सचेत करते रह गए-जो रत्त लागे कापड़ा...।

हम इस प्रकार के वाक्य, गीत, कीर्तन, पाठ बोलते-सुनते, तो खूब हैं, पर हमारे व्यवहार और हेरा-फेरी पर इसका कोई असर नहीं दिखता, वही चाल बेढंगी। यह तो अटल नियम है, कि 'अहंकारया सो मारया' पर आज हम सब की प्राय: यही स्थिति है कि-कल की खबर नहीं, सामान सौ दिन का। इसी भाव को किसी कवि ने इन शब्दों में व्यक्त किया है कि-सिकन्दर जब चला, इस दुनिया से तो दोनों हाथ खाली थे। इसलिए ही वेद ने पहले से ही सावधान करते हुए कहा है-अश्वत्थे वो निषदनम्। हमारा बसेरा इस चलायमान जगत् में है।

केवल हमारे द्वारा प्रतिदिन बर्ती जाने वाली दुनिया की चीज़ें ही अस्थिर नहीं हैं, अपितु हमारा यह शरीर, जिसको सवेरे से शाम तक हम पालने-पोसने और संवारने में लगे रहते हैं, वह भी नाशवान् है। कोई पता नहीं कब किधर से आंधी का कैसा झौंका आए और यह डण्ठल से अलग हुए पत्ते की तरह नीचे पड़ा ही दिखाई दे। तभी तो वेद ने आगे कहा है-पर्णे वो वसतिष्कृता तुम्हारा पत्ते जैसे पतनशील शरीर में बसेरा है। आए दिन जो मौत की घटनाएं सामने आ रही हैं, उन से भी यही सिद्ध हो रहा है, कि इस शरीर का कोई भरोसा नहीं, कब यह जवाब दे जाए। इस धोखे में मत रहना, कि मेरे भाग्य में तो इतने दिन जीना लिखा है और मेरी आयु अभी इतनी ही हुई है। कोई पता नहीं कब ऐसी घटना घट जाए, कि जिसके परिणामस्वरूप यह मिट्टी की काया मिट्टी में ही मिली हुई मिले।

शरीर शब्द के निर्वचन से भी यही सिद्ध होता है कि-

शरीरं शृणाते शम्नाते वा-निरुक्त० 2, 5 और धातु पाठ में शृ-धातु (हिंसायाम्-हिंसित होना, मारना, काटना) अर्थ में आती है, अर्थात् यह शरीर विनाशशील है, जब कभी जहां कहीं से कट जाता है, तथा शमु (उपशमे-ठण्डा होना) अर्थात् न जाने किस घटना के परिणाम स्वरूप यह कब ठण्डा हो जाए। आए दिन यही तो देख और सुन रहे हैं, कि किसी के हाथ में रोटी का टुकड़ा टूटा का टूटा ही रह गया, तो किसी के हाथ में तराजू या कलम पकड़ा ही रह गया। आगजनी, यन्त्रों तथा यानों की दुर्घटनाओं और बदले की भावना से होने वाले आक्रमणों, बन्धकों ने तो मौत को खिलौना ही बना कर रख दिया है। इतने पर भी अनेकों इतराते नहीं थकते और न जाने दूसरों के साथ कैसे-कैसे घिनौने शोषण और अन्याय भरे व्यवहार करते नहीं शर्माते। जैसे कि इन्होंने दुनिया में सदा रहने का पट्टा लिखवा रखा हो। ऐसे व्यक्तियों की चेष्टाओं को देख कर ही सम्भवत: यक्ष-युधिष्ठिर के संवाद में महाभारतकार श्री वेद व्यास ने किम् आश्चर्यम्?

(क्रमश:)

सम्पादकीय.....

दीपावली एवं महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस मनाएं

11 नवम्बर 2015 को दीपावली पर्व एवं महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस आ रहे हैं। आर्य जगत् के लिए ये दोनों किसी त्यौहार से कम नहीं हैं। दीपावली का पर्व हिन्दू समाज के लिए बहुत महत्त्व रखता है। लोग महीनों पहले इस त्यौहार की तैयारियां शुरू कर देते हैं। जितना उमंग और उत्साह इस पर्व में देखने को मिलता है उतना उत्साह अन्य त्यौहारों में कम ही देखने को मिलता है। इस अवसर पर लोग अपने-अपने घरों में दीपक जलाकर प्रकाश करते हैं और अन्धकार को दूर करने का प्रयास करते हैं। हिन्दू समाज में दीवाली पर्व के विषय में एक धारणा यह भी फैली हुई है कि इस दिन मर्यादा पुरूषोत्तम राम लंका से अयोध्या वापिस आए थे और इस खुशी में घी के दीपक जलाए गए थे। परन्तु ऐतिहासिक प्रमाणों से यह सिद्ध नहीं होता है। दीपावली का पर्व जिसे शारदीय नवसस्येष्टि के रूप में मनाया जाता था। लोग अपने घरों में नई फसल के आने पर खुशियां मनाते थे और उसे भगवान का प्रसाद समझकर पहले यज्ञ करके उसकी आहुति देते थे। इसीलिए इस पर्व को शारदीय नवसस्येष्टि के रूप में मनाया जाता था। समय के साथ-साथ परिवर्तन हुआ और हम पर्व के शुद्ध स्वरूप को भूलकर केवल दीपक जलाने तक सीमित रह गए।

इस दीपमाला की रात्रि का महत्त्व एक महाघटना ने और भी बढ़ा दिया। इसी रात्रि को वेदों का उद्धार करने वाले, आर्य समाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द ने अपने नश्वर शरीर का त्याग करके इहलोक से प्रयाण किया था। महापुरूषों का देहावसान साधारण मनुष्यों की मृत्यु के समान शोकजनक और रूलाने वाला नहीं होता। उनका तो प्रादुर्भाव और महाप्रयाण दोनों ही लोककल्याण और आनन्द प्रदान करने के लिए होते हैं। वे परोपकार के लिए प्राणों को अर्पण करते हैं। संसार के सुख के लिए अपने प्राणों की बलि देते हैं। इसलिए जनता उनके बलिदान पर उनकी कीर्ति का कीर्तन और गुणगान करके एक प्रकार का आनन्द अनुभव करती है। उनका बलिदान स्वयं जनता के लिए परोपकारार्थ का उत्तम आदर्श स्थापित करके जनता को उसका अनुसरण करने के लिए प्रेरित करता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना करके समस्त मानव जाति का जो उपकार किया है, महर्षि के उस ऋण को नहीं चुकाया जा सकता। जितना सन्मार्ग महर्षि दयानन्द ने दिखाया है, जितना कुरीतियों के खिलाफ महर्षि दयानन्द ने आवाज उठाई है, नारी जाति के लिए जितना संघर्ष महर्षि दयानन्द ने किया है उतना किसी अन्य महापुरूष ने नहीं किया। महर्षि दयानन्द ने धार्मिक क्षेत्र में पाखण्ड, मूर्तिपूजा, अन्धविश्वास के ऊपर जमकर प्रहार किया। राजनैतिक क्षेत्र में उन्होंने स्वराज्य प्राप्ति पर जोर दिया। सामाजिक क्षेत्र में उन्होंने नारी जाति के उद्धार,विधवाओं की दुर्दशा को सुधारने और बाल विवाह जैसी कुरीतियों को दूर करने पर बल दिया। इसलिए हमारा कर्त्तव्य बनता है कि हम भी महर्षि के ऋण से उऋण होने का प्रयास करें। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजें ऋषि निर्वाण दिवस अवश्य मनाएं। अपनी-अपनी आर्य समाजों के अधीन जो शिक्षण संस्थाएं हैं उनमें भी मनाएं ताकि बच्चों को महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज के विषय में जानकारी मिले। महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस के अवसर पर हम अपने-अपने क्षेत्रों में आर्य समाज के प्रचार की योजनाएं बनाएं। जब हमारे सामने कोई लक्ष्य होगा तभी हम उसे पूरा करने के लिए प्रयास कर सकते हैं। हम इस अवसर पर प्रचार की योजना बनाएं जिससे महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों का घर-घर में प्रचार हो। उस योजना को क्रियान्वित करने के लिए हम सभी संगच्छध्वं, संवदध्वं की भावना को धारण करें। कोई भी कार्य तभी सफल हो सकता है जब उस कार्य को करने वाले संगठित हों। उनके विचारों में समानता हो।

आर्य समाज के नियमों को बनाते समय महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज का जो लक्ष्य निर्धारित किया है, उसे पूरा करने के लिए संगठित होने की आवश्यकता है। उन्होंने अपने राष्ट्र का नहीं, आर्य समाज का नहीं अपितु संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य बताया ताकि हम अपने उद्देश्य से भटक न जाएं। महर्षि दयानन्द के निर्वाण दिवस पर हमारा लक्ष्य होना चाहिए कि हम लोगों को आर्य समाज के बारे में जानकारी दें। आर्य समाज के बारे में आम जनता में जो भ्रान्तियां फैल चुकी हैं, उन्हें दूर करने के लिए उन्हें आर्य समाज के सिद्धान्तों से अवगत कराएं। आर्य समाज की स्थापना के पीछे महर्षि दयानन्द जी का यही उद्देश्य था कि समाज में धर्म के नाम पर जो आडम्बर दिखाई दे रहा है, मूर्ति पूजा के कारण जो अन्धविश्वास फैल रहा है, सम्प्रदायवाद के कारण जो लड़ाई झगड़े हो रहे हैं, उन्हें दूर किया जा सके। सत्य सनातन वैदिक धर्म को अपनाकर सभी लोग संगठित होकर विदेशियों की दासता से मुक्त हों। महर्षि दयानन्द किसी नए पन्थ की मत की स्थापना नहीं करना चाहते थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश में लिखते हैं कि- मैं अपना मन्तव्य उसी को मानता हूं जो तीन काल में सबको एक सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उसको मानना, मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझ को अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्य्यावर्त्त में प्रचरित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता किन्तु जो-जो आर्य्यावर्त्त वा अन्य देशों में अधर्मयुक्त चाल चलन है उस का स्वीकार और जो धर्मयुक्त बातें हैं उन का त्याग नहीं करता, न करना चाहता हूं क्योंकि ऐसा करना मनुष्य धर्म से बहि: है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों तथा शिक्षण संस्था के अधिकारियों से निवेदन है कि वे महर्षि के निर्वाण दिवस को समारोहपूर्वक मनाएं। ऐसे पवित्र विचारों के उद्घोषक, तथा प्राणिमात्र का हित चाहने वाले, सारे संसार का भला चाहने वाले, वेदों के उद्धारक महर्षि दयानन्द जी का निर्वाण दिवस मनाते हुए हमारा लक्ष्य उनके सिद्धान्तों का प्रचार- प्रसार होना चाहिए। अधिक से अधिक जनता को आर्य समाज के साथ जोड़े। हमारे कार्यक्रम मात्र औपचारिकता न होकर रचनात्मक होने चाहिए। आम जनता में महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज की विचारधारा को प्रचारित करें। वेदों को, सत्यार्थ प्रकाश को तथा महर्षि दयानन्द जी के अन्य ग्रन्थों को पढने की प्रेरणा दें। लोगों में वैदिक साहित्य बांटकर उन्हें आर्य समाज के सिद्धान्तों से अवगत कराएं। बच्चों में बाल सत्यार्थ प्रकाश वितरित करें जिसे सभा में हजारों की संख्या में छपवाया है। इन सब कार्यों में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब आपको सहयोग करेगी क्योंकि सभा के द्वारा वैदिक साहित्य प्रचारार्थ आधे मूल्य पर दिया जाता है ताकि सभी आर्य समाजें अपने-अपने क्षेत्रों मे लोगों में बांटकर प्रचार-प्रसार करे। इन्हीं कार्यों के द्वारा महर्षि दयानन्द का लक्ष्य पूरा होगा। अगर इस लक्ष्य को लेकर सभी कार्य करेंगे तो निश्चित रूप में हमें सफलता प्राप्त होगी और महर्षि दयानन्द के प्रति सच्ची श्रद्धाजंलि होगी।

-प्रेम भारद्वाज, संपादक एवं सभा महामन्त्री

अज्ञान और अंधविश्वास आध्यात्मिक उन्नति में बाधक

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला रोड, देहरादून

मनुष्य के जीवन का उद्देश्य सांसारिक एवं आध्यात्मिक उन्नति करना है। यदि कोई मनुष्य आध्यात्मिक उन्नति की उपेक्षा कर केवल सांसारिक उन्नति में प्रयत्नशील रहता है तो यह उसके लिए एकांगी होने से घातक ही कही जा सकती है। आध्यात्मिक उन्नति से मनुष्य सुख व शान्ति के साथ आत्मा की जन्म जन्मान्तरों में उन्नति व जन्म मरण के दु:खों से मुक्ति प्राप्त करता है और सांसारिक उन्नति से क्षणिक व अल्पकालिक सुखों को प्राप्त कर शुभ व अशुभ कर्मों का संचय कर इनके फलों के भोग में फंस कर जन्म जन्मांतरों में दु:ख पाता है। मनुष्य सांसारिक उन्नति तक इसलिए सीमित रहता है कि उसे इस उन्नति के लाभ व हानि एवं आध्यात्मिक उन्नति के महत्त्व का ज्ञान नहीं है। यह ज्ञान आध्यात्मिक गुरु, शास्त्र, ग्रन्थों व इनके स्वाध्याय से प्राप्त होता है। जिसके लिए आज के मनुष्यों के पास समय नहीं है। आज के भौतिक दृष्टि से सम्पन्न व सफल मनुष्यों का अन्धानुकरण ही समाज के शेष मनुष्य करते हैं जिससे वह भी इन लोगों के कारण अपना वर्तमान व भावी जन्मों से बड़ी सीमा तक हानि पहुंचाते हैं। अन्धविश्वास, अन्धी श्रद्धा व ज्ञानरहित आस्था सत्य ज्ञान के विरुद्ध विश्वासों को कहते हैं। ईश्वर का अस्तित्व है, उसे मानना ज्ञान और न मानना व कुतर्क करना अन्धविश्वास व अन्धी आस्था है। इसी प्रकार ईश्वर तो है परन्तु वह कैसा है, इस विषय में लोगों की अपनी-अपनी मान्यताओं जिनमें कुछ बातें सत्य व कुछ असत्य होती हैं। यह असत्य बातें ही अज्ञान, ज्ञानरहित आस्था व अन्धी श्रद्धा होती हैं। आज के ज्ञान व विज्ञान के युग में यह अन्धविश्वास व अन्धी आस्थाएं समाप्त हो जानी चाहिएं थी परन्तु इनको मानने वाले गुरु व आचार्यों के अज्ञान, स्वार्थ व कुतर्कों के कारण इनके अनुयायी अन्धकार में फंसे हैं जिससे इनका मानव योनि का अनमोल जीवन मूल उद्देश्य व उसकी प्राप्ति से दूर चला गया है व चला जाता है। इससे जो हानि होती है वह गुरू व चेले, दोनों को ही होती है क्योंकि ईश्वर के कर्म-फल विधान के अनुसार जिसने जैसा कर्म किया है-उसका तदनुरूप फल उसे मिलता है। 'अवश्यमेव हि भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभं।' अर्थात् जीवात्मा को अपने किए हुए शुभ व अशुभ कर्मों के फल अवश्य ही भोगने होंगे। यदि कोई गुरू कहलाने वाला व्यक्ति अपने अनुयायी को असत्य व अज्ञान से युक्त रखता है तो इसके लिए वह भी दोषी है। यह भी जानने योग्य है कि अज्ञानी व स्वामी मनुष्य चाहे वह किसी कुल में जन्में हों, धर्म गुरू कहलाने के योग्य नहीं होते। धर्मगुरु कहलाने के लिए मनुष्य को धर्म का यथार्थ ज्ञान रखने वाला, निर्लोभी तथा परोपकारी भाव वाला होना आवश्यक है। अज्ञानी व स्वार्थी गुरू के दोष व अन्धविश्वासों से युक्त शिक्षाएं अशुभ कर्म व पाप की श्रेणी में होती हैं जिसका फल उसको जन्म-जन्मान्तर में दुखों के भोग के रूप में ही प्राप्त होना है। अत: सभी गुरुओं को स्वयं में विवेक जागृत कर अशुभ कर्मों से बचना चाहिए जिससे उनकी स्वयं की रुकी हुई आध्यात्मिक उन्नति यथार्थ आध्यात्मिक उन्नति में बदल जाए। सांसारिक व आध्यात्मिक उन्नति के लिए सत्य ज्ञान की आवश्यकता होती है।

सांसारिक ज्ञान आजकल की अनेक स्कूली पुस्तकों आदि में मिल जाता है। इससे इतर सामाजिक व्यवहार व आध्यात्मिक ज्ञान के लिए हमें स्वाध्याय की श्रेष्ठ पुस्तकों की सहायता लेनी चाहिए। हमने अपने अनुभव से जाना है कि इसके लिए सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कार विधि, आर्याभिविनय, उपनिषद, मनुस्मृति, 6 दर्शन, चार वेद व उनके भाष्य आदि उत्तम ग्रन्थ हैं। आध्यात्मिक उन्नति के लिए हम इसके दो भाग कर सकते हैं। प्रथम बाग में अध्यात्म से जुड़े ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति के सत्य स्वरूप का ज्ञान, जन्म व मृत्यु का प्रयोजन, नाना प्राणी योनियों में जीवात्मा का जन्म, सृष्टि की उत्पत्ति का प्रयोजन, आध्यात्मिक उन्नति के साधनों व उपायों का ज्ञान आते हैं। द्वितीय भाग में आध्यात्मिक उन्नति के सत्य साधनों व उपायों को जानकर तदनुसार साधना व आचरण करना है। आध्यात्मिक उन्नति के लिए मनुष्य को अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय व ईश्वर प्रणिधान को अपनाना अर्थात् आचरण में लाना होगा। कुछ-कुछ तो यह सभी सांसारिक लोग मानते व आचरण करते हैं परन्तु उच्च आध्यात्मिक उन्नति के लिए इसे पूर्ण रूप से पालन करना आवश्यक है। यदि इसमें से किसी एक व सबको, कुछ व अधिक छोड़ते व पालन नहीं करते, तो उतनी-उतनी मात्रा में हम ईश्वर से दूर होते जाते हैं, जिसका परिणाम आध्यात्मिक गिरावट होकर अशुभ कर्मों को करना व उसमें फंसना ही होता है। अत: सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय कर इन सब साधनों को गहराई से जानकर इसका पालन करना चाहिए जिससे अभ्युदय व नि:श्रेयस की यात्रा सुगम रूप से अपने अन्तिम लक्ष्य मोक्ष की ओर चल व आगे बढ़ सके। इसके लिए यह भी आवश्यक है कि प्रत्येक गुरु भक्त अपने गुरु के ज्ञान व उसके जीवन तथा आचरण पर भी पूरा ध्यान रखे और विचार करे कि वह उसे उचित व सत्य शिक्षा व मार्गदर्शन दे रहा है या नहीं। यदि वह अपने गुरु की ओर से आंखें बन्द रखेगा तो उसका शोषण होता रहेगा जिसका परिणाम उसकी आध्यात्मिक उन्नति न होकर भावी जीवन में हानि के रूप में सामने आएगा।

यह भी विचार करना चाहिए कि धर्म क्या है व किसे कहते हैं। हमारा अध्ययन व अनुभव बताता है कि धर्म सत्य के पालन को कहते हैं। हमें अपने कर्त्तव्यों का ज्ञान होना चाहिए। उन कर्त्तव्यों के पालन में हानि लाभ की बुद्धि न रखकर सच्ची निष्ठा से उनका पालन करना ही धर्म होता है। अज्ञानी मनुष्य अपने कर्त्तव्य से भी पूर्णत: परिचित नहीं होता। इसके लिए तो सच्चा गुरु व स्वाध्याय सहायक होते हैं। परन्तु यदि गुरु स्वयं अज्ञानी हो, साथ में स्वार्थी भी हो व अपने अनुयायी से भौतिक द्रव्यों की अपेक्षा करता हो तो वह अपने अनुयायी, शिष्य व भक्त का सही मार्गदर्शन नहीं कर सकता। आजकल अनेक धार्मिक ग्रन्थ में सच्ची शिक्षाओं की कमी होने के साथ कुछ ऐसी बातें भी हैं जो धर्म कर्म से सम्बन्ध न रखकर मनुष्य-मनुष्य को आपस में दूर करती व बांटती हैं। लोगों ने इन्हें भी धर्म समझ रखा है जो कि उनका अपना भारी अज्ञान है। धर्म का उद्देश्य तो श्रेष्ठ मानव का निर्माण होता है। वेद में इसे कहा गया है कि "कृण्वन्तो विश्वमार्यम। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही ईश्वर ने सृष्टि के आदि में चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को क्रमश: एक-एक वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद का ज्ञान दिया था जिनमें ज्ञान, कर्म, उपासना तथा विज्ञान का ज्ञान है। वेदों में कोई भी बात अज्ञान, अन्धविश्वास, अन्धी आस्था, कुरीति, पाखण्ड, सामाजिक विषमता, सामाजिक अन्याय आदि की नहीं है। चारों वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक हैं। अत: चारों वेद, उनके व्याख्या व टीका ग्रन्थ व्याकरण, दर्शन, उपनिषद, मनुस्मृति, सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कार विधि, आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय व अध्ययन करना चाहिए क्योंकि यह सब वेद मूलक ग्रन्थ हैं और इनके बनाने वाले वेदों के मूर्धन्य विद्वान व पूर्ण ज्ञानी मनुष्य थे। महर्षि दयानन्द ने वेदों का प्रचार किया और वेदों पर आधारित सत्य ज्ञान से पूर्ण ग्रन्थों की रचना की। इनका उद्देश्य किसी व्यक्ति को उसके मत व पंथ से छुड़ाना नहीं था अपितु वह सभी मनुष्यों में ज्ञान व विवेक उत्पन्न करना चाहते थे। जिससे वह अपने जीवन के बारे में सही निर्णय ले सकें और सांसारिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार की उन्नति कर सकें जो कि मनुष्यों के मत-मतान्तरों में फंसे होने से नहीं हो पाती। आध्यात्मिक उन्नति करने वाले मनुष्य के लिए दो मुख्य कर्त्तव्य हैं जिनमें प्रथम है ईश्वरोपासना व सन्ध्या तथा दूसरा दैनिक अग्निहोत्र। इन दोनों को करके ही मनुष्य की सांसारिक व आध्यात्मिक उन्नति होती है। सन्ध्या को करना आत्मा की उन्नति का सर्वश्रेष्ठ साधन व उपाय है। इसमें ईश्वर व जीवात्मा के स्वरूप का चिन्तन, ईश्वर के उपकारों का स्मरण, परोपकार व सेवा करने के व्रत लेना व अपने सभी श्रेष्ठ कार्यों को ईश्वर को समर्पित कर उससे धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति की प्रार्थना करना होता है। सन्ध्या कराने वाले व्यक्ति को यदि ईश्वर व जीवात्मा के साथ प्रकृति व सृष्टि के सत्य स्वरूप का ज्ञान नहीं है तो उसे आशातीत सफलता नहीं मिल सकती। अत: इसके लिए सत्य ग्रन्थों सत्यार्थ प्रकाश, स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश वा आर्योद्देश्यरत्नमाला आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय आवश्यक करना चाहिए। स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश वा आर्योद्देश्यरत्नमाला ग्रन्थ तो अत्यन्त लघु ग्रन्थ हैं। इन्हें एक या दो घण्टे में ही पढ़ा, समझा व जाना जा सकता है। इससे जो लाभ होता है वह हमारे विचार से बड़े से बड़े पोथे पढ़ने पर भी शायद नहीं होता। हम सभी मित्रों का आह्वान करते हैं कि वह सद्ग्रन्थों के स्वाध्याय का व्रत लें। वैदिक विधि से साधना कर अपनी आध्यात्मिक उन्नति करें और धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की सिद्धि को प्राप्त करने में सफल हों।

राष्ट्र एकता के सूत्राधार : महर्षि दयानन्द सरस्वती जी

-ले० राम कुमार सोबती प्रिंसीपल गांधी आर्य हाई स्कूल, बरनाला

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को लोगों ने अपने-अपने दृष्टिकोणों से देखा है, परन्तु महर्षि के सत्य को प्रकट करने के मनोचित कार्य से कुछ लोगों में वैमनस्य तथा विघटनवादी प्रवृत्ति की गंध आती है। यह बात केवल सामान्य लोगों की ही नहीं, बल्कि महात्मा गांधी जैसे व्यक्ति ने भी इसी काल्पनिक भावावेश में आकर एक सत्य महर्षि दयानन्द तथा सत्यार्थ प्रकाश के विरुद्ध अनर्गल बातें लिखकर सर्वप्रिय होने का असफल प्रयास किया था तो क्या वास्तव में महर्षि के विचार एवं कार्य मानव समाज में विघटन उत्पन्न करते हैं ? आइए शान्ति के साथ अपने विवेक से विचार करें। महर्षि से पूर्व ईश्वर की मान्यताओं का क्षेत्र एक विश्व-व्यापी अखाड़ा बना हुआ था। राम का उपासक कृष्ण को गाली देता था, कृष्ण के भक्त राम तथा विष्णु के भक्तों को कोसते थे, इसी प्रकार शिव, हनुमान, ब्रह्मा इत्यादि के भक्तों के वर्ग बने हुए थे। सारा हिन्दू समाज ईश्वर के नाम पर असंख्य गुटों में बंटकर युद्ध का अखाड़ा बना हुआ था। महर्षि ने उस समय एक ईश्वर का पाठ पढ़ाया और उपरोक्त सारे नाम ईश्वर के गौण तथा मार्मिक बताते हुए सबको एक ईश्वर उपासना के सूत्र में बांध कर मानव समाज को संगठित किया सत्यार्थ प्रकाश का पहला समुल्लास ईश्वर के नाम पर लड़ते हुए विघटित मानव समाज को सुसंगठित करने के सत्य प्रयास का मुंह बोलता चित्र है, क्या इतने पर भी महर्षि को फूट डालने वाला कह कर अपनी अज्ञानता प्रकट करने का कोई साहस करेगा?

महर्षि दयानन्द से पहले धर्म ग्रन्थों के नाम पर कितना खून-खराबा होता था और मानव समाज कितने वर्गों में बंटा हुआ था ? इसका तो इतिहास ही साक्षी है, परन्तु महर्षि ने कहा कि सब सम्प्रदायों का मूल वेद है, अतः वेद को अपना धर्म ग्रन्थ मानों क्योंकि यह सर्वभौम है। अन्य सारे ग्रन्थ किसी देश विशेष, वर्ग विशेष, जाति-विशेष एवं विचार विशेष से ही बंधे हुए हैं, औरों की क्या कहें भारत में ही धर्म ग्रन्थों के सम्बन्ध में न जाने कितने वर्ग बने हुए थे। महर्षि दयानन्द जी ने घोषणा की कि इन सभी धर्म ग्रन्थों में जितना सत्य है, वह वेद से गया है, अतः आगे होकर एक वेद मत पर आचरण करे, पाठक सोचे कि ग्रन्थ विशेषों में विभक्त निष्ठ लोगों को एक सूत्र में बांधने का कार्य संगठित करने का प्रशंसनीय प्रयास नहीं कहलाए क्या ?

महर्षि दयानन्द जी के समय विश्व मजहबों की टुकड़ियों में बंट कर पारस्परिक जघन्य संघर्ष का घृणित क्षेत्र बना हुआ था, मजहब के नाम पर क्या-क्या अमानवीय घटनाएं घट रही हैं, इसका जीता जागता प्रमाण आज यू. पी., गुजरात आदि राज्यों में हुए दंगों से देखा जा सकता है, जिन्हें लिखते हुए लेखनी भी थर्राती है, महर्षि ने सबको संगठित होने का उपाय मानवीय धर्म को बताया। अर्थात् धर्म उत्तम आचरणों को धारण करने का नाम है। महर्षि ने कहा कि वर्तमान मजहबों में जो अच्छी बातें हैं, वे सभी मानव धर्म वेद से गई है, दूसरी बात यह है कि सभी मत मनुष्य विशेषों के आश्रय पर खड़े किए गए हैं, इसलिए मजहब आपस की फूट का कारण बने हैं। महर्षि ने कहा जो भी उत्तम आचरण करता है, वह धार्मिक है और उत्तम आचरण में सभी एकमत है, भेद है तो केवल अपनी कपोल कल्पनाओं में है। अतः तुम सब मानव समाज को झगड़ों की भट्ठी में झोंकने वाले इन मजहबों के षडयन्त्र से ऊपर उठकर, आत्मवत् सर्वभूतेषु आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत तथा धारणाद्धर्म इत्याहुः।। से यथार्थ धर्म को अपनाओ क्योंकि धर्म आपस में लड़ता नहीं है, परन्तु परस्पर प्रेम करना सिखाता है। औरों की छोड़िए एक ईश्वर के मानने वाले ईश्वर के सगुण और निर्गुण स्वरूपों पर विभक्त होकर लड़ते थे। महर्षि दयानन्द ने समझाया प्रत्येक वस्तु सगुण तथा निर्गुण होती है, जो गुण वस्तु में हो उनके कारण तो सगुण और जो न हो उनके कारण निर्गुण होती है। यह नियम सभी जगह लागू होता है। अतः ईश्वर सगुण भी है तथा निर्गुण भी है। इस कारण एक ही ईश्वर के भक्तों तुम्हें एक ईश्वर के नाम पर काल्पनिक मिथ्य बातें बना कर लड़ना नहीं चाहिए, मानव समाज को संगठित करने का कितना सुन्दर उपाय बताया।

इसके अतिरिक्त जो लोग कहते थे कि दर्शनकारों में आपस में मतभेद है, इस विचार का प्रभाव आर्यों में फूट को बढ़ाने में सहायक होता था, स्वामी जी ने कहा कि दर्शनकारों में कोई मतभेद नहीं था, सृष्टि के छः अवयवों की एक-एक दर्शनकार एक-एक ही व्याख्या करता है, वेद एवं वैदिक मान्यताओं पर किसी का भी मत भेद नहीं है। महर्षि दयानन्द ने इसी विचार के माध्यम से आर्यों को संगठित करने का प्रयास किया।

महर्षि दयानन्द जी के समय में जन्मगत्, जाति-पाति के द्वारा तो फूट पिशाचनी आर्यों को निगले ही जा रही थी, स्वामी जी ने उसका विरोध कर गुण, कर्म एवं स्वभाव के आधार पर ऊंच-नीच का निर्णय दिया जिसके कारण मानव समाज को संगठित होने में अत्याधिक सहायता मिली। उस समय प्रान्तवाद एवं भाषावाद तो सीमा पार करने को हो रहा था, स्वामी जी ने इनकी सीमाएं तोड़ कर स्वयं उत्तर-भारत में प्रचार किया और अपना साहित्य आर्य भाषा हिन्दी में लिख कर सारे राष्ट्र को संगठन के सूत्र में बांधने का दूरदर्शिता पूर्ण कार्य किया। फूट के प्रतीक छुआ-छूत ने जो विनाश किए वे शताब्दियों तक मिटने असंभव है। इसी डायन ने देश के टुकड़े करा दिए और आज भी और टुकड़े होने के आसार हो रहे हैं, जिसका जीता जागता प्रमाण जम्मू-कश्मीर में अलगाव-वादियों द्वारा दिन प्रतिदिन पाकिस्तान के झण्डे फहराना और पाकिस्तान के पक्ष में बातें बोलना है। काश हम महर्षि दयानन्द जी के बताए एकता के उपायों को अपना पाते तो आज देश का नक्शा ही और कुछ होता। इस प्रकार महर्षि के लगभग प्रत्येक कार्य से देश के संगठन को बल ही मिला, परन्तु आज के डरपोक एवं सर्वप्रियवादी लोग ऋषि पर विघटन वाद का आक्षेप लगाते हैं। चूंकि स्वामी जी ने सत्य कह दिया है। यह उनका दोष समझ लीजिए आज तो जो हलवा एवं गोबर को एक जैसा बताता है, वह ठीक है परन्तु बुद्धि से काम लेकर दोनों में भेद बताएं तो फूट डालने वाला साम्प्रदायिक कहलाएगा। महर्षि दयानन्द के साथ भी यही सब कुछ हो रहा है, यदि महर्षि दयानन्द जी चोर को चोर और शाह को शाह न कहकर दोनों को एक समान कह देते तो इन लोगों की दृष्टि में ठीक था, अतः ऋषि दयानन्द सत्यता के आधार पर ही एकता स्थापित करना चाहते थे, जो सर्वथा उचित था, आर्यों अपने कार्य से मानव समाज को एकता के सूत्र में बांधने वाले महर्षि दयानन्द के शिष्य होकर क्यों अनेकता, विघटन एवं कलह के शिकार बन रहे हो सोचो हम अपने महर्षि, गुरु आचार्य के आदेशों से कितनी दूर जा रहे हों, क्या ऋषि का ज्वलन्त जीवन हमें कुछ सिखाएगा नहीं ? लौटो, सम्भालों और होश में आओ तथा महर्षि के सच्चे शिष्य होने के गौरव एवं अधिकार को प्राप्त करके अपने सच्चे आर्यत्व का प्रमाण दो, और बोलो-

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम।

देवा भागं यथा पूर्वे संजनाना उपासते।।

वार्षिक उत्सव धूमधाम से सम्पन्न

आर्य समाज, जगाधरी वर्कशाप क वार्षिक उत्सव 2 अक्तूबर से 8 अक्तूबर तक बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। उत्सव में पंडित इन्द्रजित देव, श्री रणवीर शास्त्री ने अपने प्रभावशाली प्रवचनों से श्रोताओं को ईश्वर, यज्ञ, नारी उत्थान, गृहस्थ व आर्यत्व के सच्चे स्वरूप इत्यादि विषयों पर प्रकाश डाला जबकि श्री मोहित शास्त्री ने अपने मधुर कण्ठ द्वारा वैदिक भजनों का रसास्वादन किया। अन्तिम दिन ऋषि लंगर की विशाल व्यवस्था की गई थी। उत्सव में सर्वश्री पवन गुप्ता, बृजेश आर्य, श्याम सुन्दर व रामपाल आर्य का विशेश योगदान रहा।

-मन्त्री आर्य समाज

आर्य समाज मन्दिर, सरहिन्द में गायत्री महायज्ञ

शरद नवरात्रों के शुभ अवसर पर आर्य समाज मन्दिर में मंगलवार 13 अक्तूबर से वीरवार 22 अक्तूबर 2015 तक गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। रोज़ाना सुबह व शाम को एक-एक माला गायत्री महामन्त्र का जाप किया गया। आर्य समाज के सदस्य परिवार सहित रोज़ाना बारी-बारी से यजमान बने। इस यज्ञ की पूर्ण आहुति विजय दशमी के दिन डाली गई। जहां आर्य नगर निवासियों ने अपना सहयोग दिया। वहीं महर्षि दयानन्द हाई स्कूल के प्रधान प्रो. बलराज सूद, प्रिंसीपल कामनी धीर व पूरे स्टाफ ने बड़ी निष्ठा व लगन से इस यज्ञ में अपनी-अपनी आहुति डाली। आर्य समाज के संरक्षक श्री रमेश कुमार सूद जी ने विशेष रूप से अपनी आहुति डाली। श्रीमती कमल कपिला जी ने गायत्री महामन्त्र की विशेषता अपने भजन के द्वारा प्रस्तुत की।

इस यज्ञ को दयानन्द मठ, दीनानगर से पधारे ब्रह्मचारी विभीषण नायक व निवास कुमार जी ने बड़ी श्रद्धा एवं लगन से सम्पन्न करवाया। नित्यप्रति गायत्री मंत्र की अलग-अलग ढंग से व्याख्या करके एवं मधुर भजनों के द्वारा सत्संग प्रेमियों को निहाल किया।

अन्तिम दिन शान्ति पाठ के बाद आर्य समाज के प्रधान श्री लव कुमार सूद जी ने आए हुए सभी उपस्थित जनों का धन्यवाद किया। इस यज्ञ में श्री सुभाष सूद, श्री राकेश सूद, श्री अमरजीत सूद, श्री सुधीर सूद, श्री जगनरेश सूद, श्रीमती कृष्णा सूद, श्रीमती सुरक्षा सूद, श्रीमती कमलेश सैनी, श्रीमती रश्मि, श्रीमती महिन्द्रा एडवोकेट अमन सूद आदि उपस्थित थे।

दयानन्द पब्लिक स्कूल में हवन यज्ञ का आयोजन

दयानन्द पब्लिक स्कूल दीपक सिनेमा रोड़ लुधियाना में मासिक हवन यज्ञ का आयोजन बड़ी धूमधाम से किया गया। हवन पंडित योगराज जी शास्त्री ने बड़े मनोयोग से करवाया और बच्चों को हवन कराने से हमें क्या-क्या लाभ होते हैं, उसके बारे में भी बताया। यज्ञ में स्कूल के प्रधान श्री सन्त कुमार जी व कमेटी मैम्बर्स और स्कूल स्टाफ के कई अध्यापकगण यज्ञमान बने। इस अवसर पर कमेटी के मैम्बर श्री गोपाल कृष्ण, संजीव चड्ढा, सतपाल नारंग, विजय सरीन उपस्थित हुए। हवन के पश्चात् श्री विजय सरीन जी ने यज्ञ के बारे और महर्षि दयानन्द जी के बारे एवम् आर्य समाज की राष्ट्र के प्रति सेवाओं के बारे में बताया। प्रधान श्री सन्त कुमार जी ने स्कूल की प्रिंसीपल श्रीमती सुनीता मलिक और वाइस प्रिंसीपल श्रीमती शिबी अग्रवाल और पूरे स्टाफ का धन्यवाद किया कि यह शिक्षा भी दे रही हैं और नैतिक शिक्षा भी दे रही हं और बच्चों को और सारे स्टाफ को सारे त्योहारों से पहले ही बधाई दी और फैसला किया गया कि 6.11.2015 को विशाल रूप से यज्ञ किया जाए और बच्चों से आर्य समाज के दस नियम सुने जाएं जो बच्चा ये सुनाएगा उन सभी को पुरोहित सभा और स्कूल की तरफ से पारितोषिक दिए जाएंगे और यह भी फैसला किया गया कि बच्चों के माता-पिता को भी बुलाया जाए ताकि वो देख सकें कि हमारे बच्चों को पढ़ाई के अतिरिक्त नैतिक और चरित्र निर्माण की शिक्षा दी जाती है। अन्त में शान्ति पाठ किया गया और सभी यज्ञ शेष बांटा गया।

परमात्मा का निज नाम-ओ३म्

-ले. सुशीला भगत प्रधाना स्त्री अ.स. माडल टाऊन जालन्धर

परमात्मा का सब नामों से उत्तम नाम ओ३म् है। ओ३म् के अनगिनत नाम है जिनकी गणना नहीं हो सकती। असंख्य नाम है। अ उ म-अ-अकार, उ-कार, म-मकार। ओ३म् सृष्टि की उत्पत्ति आकार मुंह भी खुल जाता है। उ-उकार मुंह गोल हो जाता है। अर्थात् संसार की पालना करता है। म-मकार मुंह बंद हो जाता है अर्थात् ओ३म् संसार का संहार भी करता है। चौथा कार्य हमें कार्यों का फल भी देता है। पुतली का नाच करवाता है। अच्छे बुरे कर्मों का फल देता है।

ओ३म् सत् चित् आनन्द स्वरूप हैं। ब्रह्मा विष्ण महेश हैं। माता-पिता, गुरु, न्यायकारी दयालु अजन्मा। दूसरा नियम सब प्रभु के हैं-सत्य, शिवं सुन्दरम्, रुद्र, वसु, बृहस्पति आदि अनेक हैं।

मुसलमान-अल्लाह कहते हैं। ओं सबसे आला अर्थात् बढ़िया है। क्रिश्चियन God, good है, मुसलमान खुदा भी कहते हैं, खुद आया है। नस नाड़ी के बन्धन से उत्पन्न नहीं हुआ। ओ३म् अजन्मा है, जन्म मरण से रहित है।

बच्चा उत्पन्न होता है तो वह भी ऊंआ-ऊंआ करता है अर्थात् बच्चा उत्पन्न होते ही ओ३म्-ओ३म् पुकारता है और कहता है कि मैं उठने में असमर्थ, चलने में असमर्थ, खाने पीने, ओढ़ने-पहनने में असमर्थ हूं। मेरा क्या होगा ? ओ३म् उत्तर देते हैं, कि जिसने तुम्हें पैदा किया वही तेरी रक्षा करेगा। इसलिए उस बच्चे की पहली मां जो जन्म देती है बड़े लाड़ प्यार से पालती है, दूध पिलाती है, उसके पास अनखुट भण्डार दूध का है, जो कभी समाप्त नहीं होता, उसके पास ऐसी थर्मस है जिसमें दूध गर्म करने की चीनी डालने की आवश्यकता नहीं होती। मक्खी मच्छर दूषित नहीं कर सकता। कुत्ता, बिल्ली झूठा नहीं कर सकता। जितना जी चाहो पीओ। फिर दूसरी माता गाय को बनाया। गाय के दूध से बच्चे को हृष्ट-पुष्ट बनाया। गाय की हर वस्तु से बच्चे के रोगों का निवारण किया। तीसरी माता-पृथ्वी माता जो अन्न आदि फलों से ओजस्वी तेजस्वी बनाती है तब तक बच्चे के दांत भी आ जाते हैं। गेहूं, जौं, गन्ना, ज्वार, बाजरा आदि तरह-तरह के परोंठे खाता है। औषधि वनस्पति से रोगों का निवारण करती है। रंग-बिरंगे पशु पक्षियों का ज्ञान देती है। चौथी माता वेद माता जो कि सब साहित्यों की मुकुट मणी है। तिनके से पहाड़ तक, जन्म से मरण तक, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ, सन्यास का सारा ज्ञान वेदों में भरा पड़ा है। राजा प्रजा का ज्ञान हमारा राजा कैसा होना चाहिए, सेनापति के प्रजा के गुण वेद माता में भरे पड़े हैं। इसलिए वेद को ज्ञान का भण्डार कहते हैं। वेद ईश्वरीय देन है। 4 ऋषियों के नाम बोल कर बताने कला-कौशल, चांद सितारों पर जाने की कला, इंजन, मशीनें बनाने की कला भरी पड़ी है। औषधियां, वनस्पतियों का ज्ञान। बच्चे की उत्पत्ति पालना गर्भ की अन्धेरी कोठरी में मेरा ओ३म् कैसे बच्चे को विकसित करता है। मानव का बच्चा मानव बनता है, पशु का पशु बनता है, पक्षी का पक्षी। धन्य हो मेरे प्यारे ओ३म् तेरी माया बड़ी निराली है। तेरा पार किसी ने नहीं पाया। ऋषि मुनी हार गए, नेति-नेति कह गए।

आर्य समाज पटियाला में वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

-ले. वेद प्रकाश तुली, मन्त्री

आर्य समाज मन्दिर, चौंक आर्य समाज, पटियाला द्वारा दिनांक 14 अक्तूबर से 18 अक्तूबर 2015 (रविवार तक) बड़ी धूम धाम और हर्षोल्लास के साथ वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य श्री हरी शंकर जी अग्निहोत्री (आगरा वाले) मुख्य प्रवक्ता के रूप में, डा. वीरेन्द्र विद्यालंकार, अध्यक्ष संस्कृत विभाग, पंजाब यूनीवर्सिटी चंडीगढ़, आर्य सन्यासी स्वामी ब्रह्मवेष जी और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के भजनोपदेशक श्री अरुण कुमार जी विशेष रूप से आमंत्रित थे। इस पूरे समारोह में पटियाला और आस-पास के कस्बों के लोगों ने बड़ी संख्या में भाग लिया गया। प्रधान श्री राज कुमार सिंगला जी के मार्गदर्शन में आर्य समाज के पदाधिकारियों ने 15-20 दिन पहले ही समारोह की तैयारियां शुरू कर दी थीं। समारोह की सूचना के लिए सारे नगर में जगह-जगह बैनर लगाए गए।

आर्य समाज के वेद प्रचार सप्ताह के अवसर पर पधारे महानुभाव प्रवचन सुनने में लीन।

14 अक्तूबर को प्रात: यज्ञ के साथ वेद प्रचार सप्ताह का शुभारम्भ हुआ। इसी प्रकार प्रतिदिन प्रात: 8.30 से 11:00 बजे तक और सायं 7.30 से 9.30 बजे तक यज्ञ, भजन और प्रवचनों का कार्यक्रम चलता रहा। प्रात: काल की बैठक के पश्चात नित्य प्रति मीठे चावल, हलवा और फलों का प्रसाद बंटता था और सायंकाल के प्रवचन पश्चात् रोज सभी के लिए ऋषि लंगर का आयोजन किया जाता था। मिष्ठान श्रोताओं द्वारा बांटा गया।

आचार्य श्री हरिशंकर जो अग्निहोत्री और डा. श्री वीरेन्द्र विद्यालंकार जी के प्रवचन मानव जीवन को सही रास्ते पर ले जाने के लिए और देश तथा समाज की अनेकों समस्याओं को सुलझाने के लिए होते थे। उन्होंने संक्षेप में बताया कि भारतीय संस्कृति के आधार स्तंभ चारों वेदों का ज्ञान किसी जाति, देश और धर्म विशेष के लिए ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए कल्याणकारी हैं। उन्होंने बताया कि वेद ईश्वर की ओर से दिया ज्ञान है जो आज से लगभग 200 करोड़ वर्ष पहले सृष्टि के ऋषि मुनियों को प्राप्त हुआ था। यह आज भी उतना ही सच और हितकारी है जितना पहले था। इससे हमें मानव जीवन को उत्तम बनाने की प्रेरणा प्राप्त होती है। मनुष्य को अपनी शारीरिक एवं आत्मिक उन्नति के साथ-साथ समाज की उन्नति में भी महत्त्वपूर्ण योगदान देना चाहिए। असहाय, दु:खी एवं अशिक्षित लोगों की सहायता करना एवं उन्हें शिक्षित करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है।

आचार्य हरि शंकर जी के प्रवचन समाज और देश की अनेकों समस्याओं जैसे कि भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रदूषण को दूर करना, गृहस्थ जीवन को ठीक प्रकार से चलाने के बारे में थे। सबसे अधिक ज़ोर उन्होंने नित्यप्रति प्रात: और सायं हवन करने पर दिया देश में यह परम्परा सदियों से चली आ रही है। श्री राम चन्द्र जी महाराज और श्री कृष्ण जी महाराज रोज प्रात: और सायं संध्या और हवन करते थे। लाखों वर्षों से चली आ रही ऋषि मुनियों की यह परम्परा आज भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जितनी उस समय थी।

आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री अरुण कुमार जी ने अपने मधुर ईश्वर भक्ति और स्वामी दयानन्द जी के बारे में सुनाए भजनों के द्वारा श्रोताओं को आनन्द विभोर किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रचार मन्त्री श्री विजेन्द्र शास्त्री जी ने किया। सैंकड़ों की संख्या में श्रोता उपस्थित रहे।

आर्य समाज मन्दिर चौंक आर्य समाज की स्थापना लगभग 130 वर्ष पहले (सन 1885 में) हुई थी। इसका इतिहास बहुत ही गौरवमयी है। भवन काफी पुराना होने के कारण पिछले वर्ष मुरम्मत और कली रोगन पर काफी धनराशि व्यय की गई थी, परन्तु यज्ञशाला बहुत छोटी और पुरानी है। इसका नवनिर्माण करने का निर्णय किया गया है, जिस पर काफी धन व्यय होने की संभावना है। 18 अक्तूबर समारोह के समापन से पहले प्रधान श्री राज कुमार सिंगला जी ने इस पुण्य कार्य के लिए धर्म प्रेमी बंधुओं से दान की प्रार्थना की। इस समारोह में मुख्यातिथि: के रूप में पहुंचे पटियाला के प्रसिद्ध डा. सुनील आर्य (पेट रोग विशेषज्ञ) (जो उस दिन हवन में भी यजमान थे) ने एक लाख रुपए दान देने की घोषणा की। ऐसे ही श्री वीरेन्द्र सिंगला वरिष्ठ उप प्रधान और डा. संजय सिंगला (हृदय रोग विशेषज्ञ) सपुत्र श्री राज कुमार सिंगला, प्रधान ने इस कार्य के लिए 51-51 हजार रुपए दान देने की घोषणा की। प्रधान जी ने इस कार्य को शीघ्र सम्पन्न करने के लिए सभी भाई बहनों से आर्थिक सहायता की प्रार्थना की।

इस अवसर पर श्री यश पाल सिंगला प्रधान आर्य समाज समाना, श्री राजेन्द्र वर्मा प्रधान, आर्य समाज सनौर, आर्य समाज नाभा के प्रधान और मंत्री, बहन सरोज चोपड़ा आर्य समाज सैक्टर 43 चंडीगढ़, श्री बाबू खान प्रधान योग सम्मति पटियाला अपने अनेक साथियों सहित विशेष रूप से पहुंचे। आयोजन की सफलता में प्रधान जी के अतिरिक्त श्री वरीन्द्र सिंगला, वरिष्ठ उप-प्रधान, श्री वेद प्रकाश तुली मन्त्री, श्री विजेन्द्र शास्त्री प्रचार मन्त्री, श्री हर्ष वर्धन स्टोर प्रभारी, श्री जितेन्द्र शर्मा कोषाध्यक्ष, श्री शैलेन्द्र मेहरा उप प्रधान, श्री अरुण कुमार उपमंत्री, श्री गुलाब सिंह पुस्तकालय अध्यक्ष, श्री भूपिन्द्र राय जी, श्री यशपाल जुनेजा जी, प्रिंसीपल श्री निखिल रंजन शास्त्री जी, श्री प्रवीण कुमार जी, श्री रमेश गंडोत्रा जी, स्त्री आर्य समाज की बहनों और अन्य भाई बहनों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। शान्ति पाठ के पश्चात् लगभग 300 भाई बहनों और बच्चों ने ऋषि लंगर का आनंद लिया। सारे ऋषि लंगरों का व्यय करने के लिए डा. श्री संजय सिंगला जी के परिवार ने 20,000 रुपए दान दिए। कार्यकारिणी के प्रत्येक सदस्य ने 2100 रुपए, श्री तुली जी ने 3100 रुपए और मुख्य अतिथि डा. सुनील आर्य जी ने 5100 रुपए का दान दिया।

अंत में प्रधान जी ने सभी का धन्यवाद किया।

आर्य समाज मोगा का 111वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मोगा के तत्वावधान में 12 अक्तूबर 2015 से 18 अक्तूबर 2015 तक वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया गया। इस उपलक्ष्य में विश्व शान्ति महायज्ञ के अन्तर्गत चतुर्वेद शतकम्, महामृत्यंजय एवं गायत्री की पवित्र ऋचाओं से आहुतियां प्रदान की गईं। वर्ष 1904 में स्थापित आर्य समाज मोगा की स्वर्णिम परम्पराओं में एक नया अध्याय जोड़ने के उद्देश्य से इस समारोह में मुख्य अतिथि के गरिमापूर्ण उत्तरदायित्व के लिये श्री सुदर्शन शर्मा जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, सम्माननीय अतिथि श्री प्रेम भारद्वाज महामंत्री और अशोक पुरूथी जी एडवोकेट रजिस्ट्रार को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया परन्तु इस बीच श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बेअदबी की दुखद घटनाओं में धर्मानुरागियों की भावनाओं को विचलित कर दिया। आवाजाही के तमाम मार्ग अवरूद्ध कर दिये गये। इस प्रकार सभा अधिकारी इस कार्यक्रम में सम्मिलित नहीं हो पाये। फलस्वरूप सभा अधिकारियों का प्रतिनिधित्व करने के लिये श्री सुदर्शन शर्मा जी ने श्रीमती इन्दु पुरी जी देवीदयाल गोपाल कृष्ण चेरिटेबल ट्रस्ट मोगा से आग्रह किया। उन्होंने इस प्रार्थना को सहर्ष स्वीकार किया। इस प्रकार उनके नेतृत्व में इस भव्य कार्यक्रम का समापन समारोह सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज मोगा के वार्षिक उत्सव पर श्रीमती नीतिका वर्मा चीफ ज्यूडिशियल मैजिस्ट्रेट मोगा को सम्मानित करते हुये आचार्य राजू वैज्ञानिक जी, आर्य समाज के प्रतिष्ठित सदस्य सत्यप्रकाश जी उप्पल एवं आर्य समाज मोगा के प्रधान श्री नरेन्द्र सूद जी।

श्रीमती नीतिका वर्मा चीफ ज्यूडिशियल मैजिस्ट्रेट मोगा ने इस कार्यक्रम के शुभारम्भ के अवसर पर पवित्र ओ३म ध्वज फहरा कर अपने संदेश में वेद माता की पवित्र ऋचाओं का महिमा गान किया। उन्होंने अपने अध्ययन काल में डी.ए.वी. की भूमिका की भूरि भूरि प्रशंसा की। आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हुये उन्होंने इस कार्यक्रम की सफलता के लिये परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की और अपनी शुभ कामनाएं प्रदान की। आर्य समाज हाई स्कूल के बैंड की प्रस्तुति के बाद ब्राह्मण वृन्द ने ध्वजगीत गाकर वातावरण को विशेष गरिमा प्रदान की। इस अवसर पर श्रीमती इन्दु पुरी जी ने भी उपस्थिति को सम्बोधित किया।

वेद प्रचार सप्ताह के अवसर पर प्रख्यात वैदिक प्रवक्ता आचार्य राजू वैज्ञानिक दिल्ली ने विश्व शांति महायज्ञ के ब्रह्मा का पदभार निर्वहन किया। सप्ताह भर प्रातः सायं आचार्य श्री ने वेद मंत्रों को व्याख्यायित करते हुये वैदिक धर्म और आर्य जीवन परिपाटी को प्रतिपादित किया। भावभूमि तैयार करने में श्री प्रताप सिंह आर्य सहारनपुर तथा श्री सुखदेव आर्य करनाल के सुमधुर भजनों ने बहुत बड़ी भूमिका अदा की। इस कार्यक्रम के मध्य विभिन्न आर्य शिक्षण संस्थाओं में आमंत्रित विद्वानों के भजन प्रवचन और आशीर्वचनों के कार्यक्रम आयोजित किये गये। युवा पीढ़ी का मार्ग दर्शन करने में आचार्य श्री के प्रवचनों ने महती भूमिका अदा की। छत्तीसगढ से पधारे आचार्य शैलजी ने बच्चों को योगाभ्यास, जुडो कराटे तथा विभिन्न यौगिक क्रियाओं और मुद्राओं में पारंगत किया। इन बच्चों ने समापन समारोह में भव्य प्रस्तुति प्रदान करके सबको रोमांचित कर दिया।

इस महायज्ञ की पूर्णाहूति के अवसर पर गणमान्य नागरिकों और यजमानों ने मिल कर अपनी अपनी आहुतियां प्रदान की। इस मांगलिक अवसर पर यज्ञवेदी की भव्यता देखकर बरबस गुरुकुल परम्पराओं की स्मृति ताजा हो गई। मुख्य अतिथि श्रीमती इन्दु पुरी के आगमन पर प्रतिष्ठित सदस्य सत्य प्रकाश उप्पल, प्रधान नरेन्द्र सूद, मंत्री पुरुषोत्तम गोयल, कोषाध्यक्ष जोगिन्द्र सिंगला ने मुख्य द्वार पर ही डी.एन. माडल स्कूल तथा आर्य माडल स्कूल मोगा के बैंड की तुमुल ध्वनि के बीच उनका स्वागत, अभिवादन और अभिनन्दन किया। प्रांगण में उनके पर्दापण पर प्रतिष्ठित वयोवृद्ध आर्य सभासद श्री प्रियतम देव सूद के अतिरिक्त सभी आर्य सभासदों ने माल्यार्पण कर उनका स्वागत किया। इस अवसर पर आर्य माडल हाई स्कूल, डी.एन. माडल स्कूल, देव समाज गर्ल्ज स्कूल ने प्रभु भक्ति और राष्ट्रभक्ति के गीतों पर आधारित कोरियोग्राफी पेश की। इस अवसर पर राय बहादुर डा. मथुरा दास पाहवा की स्मृति में पाहवा परिवार की ओर से आर्य माडल स्कूल के मेधावी छात्रों को प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने के उपलक्ष्य में क्रमशः रुपये 10,000/-, 7,000/- एवं रुपये 5,000/- के चैक श्रीमती इन्दु पुरी ने प्रदान किये। इस अवसर पर शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाओं के दृष्टिगत डी.एम. कालेज मोगा के प्राचार्य श्री एस.के. शर्मा को सम्मानित किया गया।

निकटवर्ती समाजों के विभिन्न प्रतिनिधियों को भी ससम्मान स्मृति चिन्ह प्रदान किये गये। मुख्यातिथि श्रीमती इन्दु पुरी ने परस्पर प्रेम, सेवा, सदभाव और सच्चाई के मार्ग का अनुसरण करने के लिये प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि छोड़ देवें छल कपट को की भावना हमारे जीवन में परिलक्षित होनी चाहिये।

समापन समारोह के अन्त में प्रतिष्ठित साहित्यकार सत्य प्रकाश उप्पल ने उपस्थिति के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर उन्होंने आर्य समाज मोगा की स्वर्ण जयन्ती का भी उल्लेख किया जबकि उस समय उनकी आयु मात्र एक वर्ष थी। आर्य समाज मोगा के 111वें वार्षिक उत्सव की सफलता पर सब को बधाई देते हुये उन्होंने कहा कि मैं गौरवान्वित हूं कि मैं इस महान अवसर का साक्षी हूं।

इस समस्त कार्यक्रम की भव्य प्रस्तुति के लिये उन्होंने सुयोग्य पुरोहित पंडित दिवाकर भारती जी का विशेष रूप से धन्यवाद किया। इस कार्यक्रम के निर्विघ्न सम्पन्न होने पर पंडित दिवाकर भारती जी ने शांति पाठ के साथ पुनः उसी उत्साह और उमंग के साथ आर्य समाज के पर्व और समारोह की सफलता की कामना की। अनन्तर प्रीति भोज आनन्द के साथ ग्रहण किया।

-पुरुषोत्तम राय मंत्री

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।